प्रमेयरत्नमाला (फोल्डर नं. ००११३१)

श्रीमल्लघु अनन्तवीर्य विरचित– अनुवादक-रमेशचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल
समर्पण
संकल्प
आभार
प्रकाशकीय
प्रस्तावना
विषयानुक्रमणिका
प्रथम समुददेश ---------- १-२८
मड्गलाचरण ---------- १
प्रमाण और प्रमाणभास का लक्षण कहने की प्रतिज्ञा ---------- ४
सम्बन्ध, अभिधेय और प्रयोजन का कथन ---------- ६
प्रमाण का लक्षण ---------- १०
प्रमाण के लक्षण में ज्ञान विशेषण का समर्थन---------- १३
ज्ञान निश्चायात्मक है ---------- १४
अपूर्वार्थ का लक्षण ---------- १६
स्वव्यवसाय का लक्षण ---------- १७
ज्ञान का प्रामाण्य ---------- २१
द्वितीय समुददेश ---------- २९-८२
प्रमाण के भेद ---------- २९
प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण---------- ३०
प्रत्यक्ष का लक्षण ---------- ४२
वैराघ का लक्षण---------- ४३
सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष ---------- ४५
अर्थ और आलोक सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष के कारण नहीं हैं ---------- ४७
ज्ञान अर्थ का प्रकाशक होता है ---------- ४८
योग्यता से पदार्थो के जानने की व्यवस्था ---------- ४९
कारण होने से पदार्थ परिच्छेघ है ईसका निराकरण ---------- ५१
मुख्य प्रत्यक्ष ---------- ५१
आवरण सहित और ईन्द्रिय जनित मानने पर ज्ञान का प्रतिबन्ध सम्भव ---------- ५२
सर्वज्ञता पर शड्का ---------- ५२
सर्वज्ञता का समर्थन ---------- ५८
नैयायिकों की सृष्टिकर्तुत्व विषयक मान्यता ---------- ६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नैयायिकों की मान्यता का निराकरण -- ६५
बह्म के सदभाव को सिद्ध करने वाले प्रमाण का अभाव ------------------------------------- ७४
तृतीय समुददेश -- ८३-१५३
परोक्ष का लक्षण -- ८३
परोक्ष के भेद -- ८३
स्मृति का लक्षण -- ८४
प्रत्यभिज्ञान का लक्षण --- ८४
ऊह प्रमाण -- ८६
अनुमान प्रमाण --- ८७
हेतु का लक्षण --- ८७
अविनाभाव का लक्षण -- ९१
सहभाव -- ९१
क्रमभाव -- ९१
साध्य का लक्षण -- ९२
असिद्ध विशेषण की सार्थकता -- ९२
ईष्ट और अबाधित विशेषणों के ग्रहण का कारण -- ९३
पक्ष -- ९४
विकल्प सिद्ध धर्मी में सत्ता और असत्ता दोनों ही साध्य हैं ------------------------------------ ९६
प्रमाण सिद्ध और उभयसिद्ध धर्मी में साध्यकर्म से विशिष्टत --------------------------------- ९८
व्याप्तिकाल में धर्म ही साध्य होता हैं -- ९९
गम्यमान भी पक्ष का प्रयोग -- १००
पक्ष और हेतु दोनों ही अनुमान के अंग हैं -- १०३
उदाहरण साध्य की जानकारी का अंग नहीं हैं --- १०३
उपनय और निगमन अनुमान के अंग नहीं हैं -- १०६
समर्थन ही हेतु का यथार्थ रुप हैं -- १०७
बालकों की व्युत्पति के लिए उदाहरणादि हैं -- १०७
अन्वय और व्यतिरेक दृष्टांन्त -- १०८
उपनय -- १०९
निगमन --- १०९
स्वार्थ और परार्थानुमन --- ११०
उपलब्धि और अनुपलब्धि हेतु --११२
अस्तित्व साध्य होने पर अविरुद्धोलब्धि के छह भेद --------------------------------------११३
कारण के व्यापार के आश्रित ही कार्य का व्यापार -- ११६
सहचर हेतु का स्वभाव, कार्य और कारण हेतु में अन्तर्भाव नहीं होता है --------------------- ११७
प्रतिज्ञादि पाँच अवयव --११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्य हेतु --११८
कारण हेतु -- ११९
पर्वचर हेतु -- ११९
उत्तरचर हेतु --- ११९
सहचर लिंग -- ११९
विरुद्धोपलब्धि के भेद --- ११९
अविरुद्धानुपलब्धि के भेद --१२१
विधि के अस्तित्व के सिद्ध करने में विरुद्धानुपलब्धि के भेद ---------------------------------- १२३
तथोपपत्ति और अन्यथानुपपत्ति -- १२६
आगम का स्वरुप --- १२८
मीमांसाकों की आपत्ति -- १२९
मीमांसकों का निराकरण -- १३४
शब्दादि वस्तु का ज्ञान कराने के कारण हैं --- १४७
अन्यपोह का निराकरण -- १४८
चतुर्थ समुददेश -- १५४-१८९
प्रमाण का विषय -- १५४
सांख्यभिमत प्रधान तथा उसका निराकरण -- १५४
बौद्धों के अनुसार विशेष ही वस्तु का स्वरुप हैं --- १५९
बौद्धों का निराकरण--- १६५
क्षणिकत्व का निराकरण --- १६८
परस्पर निरपेक्ष सामान्य विशेष की मान्यता वाले योगों का निराकरण---------------------------- १७३
अन्कान्तात्मक वस्तु के समर्थन हेतु हेतुद्वय --१८१
दो प्रकार का सामान्य --- १८२
विशेष के दो भेद -- १८३
पर्याय--- १८३
आत्मा के व्यापकपने का निराकरण -- १८४
आत्मा के पृथिव्यादिचतुष्टय रुप होने की असम्भवाना -- १८६
व्यतिरेक -- १८८
पञ्चम समुददेश --- १९०-१९१
प्रमाण के फल --- १९०
फल प्रमाण से कथञ्चित अभिन्न है और कथञ्चित भिन्न हैं ------------------------------------- १९०
षष्ठ समुददेश --- १९२-२२८
प्रमाण के स्वरुपाभास --- १९२
प्रत्यक्षाभास --- २००
परोक्षाभास -- २००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्मरणाभास -- २००
प्रत्यभिज्ञानाभास -- २०१
तर्काभास --- २०१
अनुमानाभास --- २०१
पक्षाभास --- २०२
हेत्वाभासों के भेद --- २०४
दृष्टान्ताभास --- २०९
बालप्रयोगाभास --२११
आगमभास -- २१२
संख्याभास -- २१३
विषयाभास --- २१६
फलाभास --- २१८
अपने पक्ष के साधन और परपक्ष के दूषण की व्यवस्था ------------------------------------ २२०
नयों का विवेचन -- २२१
वाद का लक्षण --- २२६
पत्र का लक्षण-- २२६
सूत्रकार का अन्तिम श्लोक -- २२६
टीकाकार की प्रशस्ति --- २२८
परिशिष्टम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org